अध्यात्म ज्ञान एवं चिन्तन संस्था

(SOCIETY FOR ADHYATMA STUDIES)

17, सिविल लाइन्स, कमिश्नर ऑफिस के सामने, मुरादाबाद – 244001
मो0 9412241221

ब्रह्म ज्ञान विचार गोष्ठी – 57

16.12.2012

"जैन धर्म दर्शन "

वक्ताः डॉ0 सुरेन्द्र प्रकाश जैन

निवेदक

डॉ0 यू0 के0 शाह
शाह नर्सिंग होम,
सिविल लाइन्स, मुरादाबाद
फोन नं0 9359716440

रविन्द्र नाथ कत्याल
अमर बसेरा,
सिविल लाइन्स, मुरादाबाद
फोन नं0 9837041945

सुधीर गुप्ता, एडवोकेट
17, सिविल लाइन्स,
मुरादाबाद
फोन नं0 9412241221

जैन धर्म दर्शन

जैन धर्म के आयाम

1. अध्यात्म विद्या/तत्व धर्म ज्ञान एवं आत्मा/परमात्मा ज्ञान दर्शक – मुक्ति (मोक्ष), स्वयं शुद्धि
2. सामाजिक व्यवहार

तीर्थंकर

24 तीर्थंकर
प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभ देव (त्रैता युग – तीसरा काल समाप्ति के लगभग चार वर्ष पूर्व)
अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर (600 ईशा पूर्व) (कलयुग – चौथा काल समाप्ति के लगभग चार वर्ष पूर्व, श्रीकृष्ण से लगभग2500 वर्ष बाद)

पाप–पुण्य खाते में कर्माणु अर्जन की संगति

नोट : कर्माणु अर्थात कर्म या कार्यशीलता द्वारा अर्जित व विसर्जित कर्म अणु।

दस आचार संहितायें

1. पांच महाव्रत – अहिंसा, सत्य, अचोर्य, शील व अपरिग्रह।
2. चार कषाय – क्रोध, मान, माया व लोभ।
3. तीन अयेाग्यकृत विकार – राग, द्वेष, मोह।
4. दो सिद्धांत–कथन (दलीलं–वाद) – अनेकान्तवाद व स्यादवाद।
5. दो अपेक्षाकृत ज्ञान/नीति/नियम – निश्चयनय व व्यवहारनय।
6. चार ज्ञान – मति, श्रति, मनःप्रयाय व अवधि ज्ञान।
7. एक सम्पूर्ण ज्ञान – केवल ज्ञान।
8. विविध कर्म –
   (i) द्रव्य कर्मः आठ (ज्ञानावरण, दर्शवरण, मोहनीय, अन्तराय, वेदनीय, आयु, नाम व गोत्र)
   (ii) भाव कर्मः दो (राग व द्वेष)
   नोकम कर्मः सत्यता व उचित विचार आदि का अभाव
9. तीन गुप्तियां – मन, वचन व काया द्वारा
10. दो मुख्य चरित्र (आचरण) – तप व त्याग।

आठ मुख्य संदेश

1. इस त्रिभुवन में जीव अनन्त सुख चाहे दुख से भयवन्तः। जीव व अजीव दोनों नित्य व अनन्त।
2. तीन रत्न – सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान, सम्यक चारित्र ही मोक्ष का मार्ग।
3. णमोकार मंत्र जिसमें अरहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय व सर्व साधुओं (ज्ञान श्रेणी व त्याग श्रेणी) को नमन किया गया है।
4. 6 द्रव्य व 9 तत्व, नित्य, अनन्त – कोई आदि नहीं, कोई अन्त नहीं। कोई सृष्टा नहीं।
   (i) 6 द्रव्य – जीव, अजीव (पुद्धगल, धर्म, अधर्म, आकाश व काल)।
   (ii) 9 तत्व – चेतन, अचेतन, पाप कर्म क्रमाणु, पुण्य कर्म कर्माणु, क्रमाणु आर्जव, कर्माणु बन्ध, कर्माणु सवंर, क्रमाणु निर्जरा व मोक्ष।
5. मुक्त जीवात्मा को परमात्मा कहा गया है – जो एक स्वतन्त्र सिद्ध शिला स्थापित एक परमशान्त व केवल ज्ञानी अकार्यशीलता, व अनन्त काल रहने वाली मुक्त स्थिति

है। इसी को मोक्ष कहा गया है। कर्माणु प्रभावित आत्मा जीवात्मा कहलाती है। कर्माणु रहित आत्मा परमात्मा कहलाती है, जो ईश्वर की परिभाषा के अन्तर्गत नहीं है। जैन दर्शन में हिन्दू ईश्वर का सिद्धांत अमान्य है।

6. सृष्टि व प्रकृति का कोई आदि व अन्त नहीं है। इसको सर्किल (चक्रीय) रुपी स्वाभाविक स्थिति (प्रक्रिया) माना है। शून्य से अनन्त व अनन्त से शून्य।
7. शून्य तथा अनन्त को "है भी – नहीं भी" मानते हुये पूर्ण मान्यता एवम प्रभावशाली/महत्वपूर्ण स्थिति व गणित अनुसार मान्यता भी प्राप्त है।
8. जैन धर्म आस्तिक भी है, नास्तिक भी है।

हिन्दू वेद–पुराण–उपनिषद व जैन आगम
मुख्य दर्शनात्मिक व तुलनात्मिक अन्तर

क्र0	हिन्दू (वेद, गीता, उपनिषद व पुराण)	जैन आगम (शास्त्र)
1.	आस्तिकवाद / ईश्वरवाद	आस्तिक / नास्तिक दोनो वाद
2.	(i) परमात्मा (ईश्वर), आत्मा तथा प्रकृति (ii) केवल परमात्मा	जीव (आत्मा, चेतन), अजीव (अचेतन) क्रमाणु सहित आत्मा → जीवात्मा क्रमाणु रहित आत्मा → परमात्मा
3.	चार काल / युग – सतयुग, त्रैतायुग, द्वापर युग व कलयुग। इस समय कलयुग।	छह काल – प्रथम से छठे तक। इस समय पंचम काल।
4.	परमात्मा – कार्यशीलता – आत्मा, प्रकृति, सृष्टि पर प्रभाव	परमात्मा – परम शांत, मुक्त, स्वतन्त्र व दूसरे तत्व व सृष्टीतया प्रकृति पर अप्रभावी
5.	प्रकृति तीन गुण (सत्, रज, तम) प्रभावी व माया। चार वर्ण, चार अवस्थायें।	ऐसा कुछ नहीं – वर्ण व्यवस्था केवल कार्य रुपक।
6.	ईश्वर – अवतार मान्यता।	ऐसा कुछ नहीं – परमात्मा, आत्मा की मुक्त अवस्था – तत्पश्चात अमिट व अनन्त कालिक। फिर पुनः जन्म–मरण नहीं।
7.	(i) ईश्वर की तीन शक्तियां – ब्रह्मा, विष्णु, महेश (ii) मैथुनि व अमैथुनि सृष्टि (iii) प्रजापति	ऐसा कुछ नहीं
8.	अजीव द्रव्य – पृथ्वी, अग्नि, जल, वायु व आकाश	अजीव द्रव्य – पुद्धगल, धर्म, अधर्म, आकाश व काल
9.	जीवात्मा – मुक्तिमार्ग : कर्मयोग, ज्ञान योग, भक्ति योग – ईश्वरीय प्रभाव भी मान्य।	सम्यक दर्शन, ज्ञान व चारित्र। स्वयं शुद्धि द्वारा मुक्ति मोक्ष – परमात्मा स्वरुप।
10.	यहां प्रयास स्वयं हेतु व कुछ हद तक दूसरों हेतु भी। ईश्वर व दूसरी शक्तियां प्रभावशाली।	यहां प्रयास केवल स्वयं हेतु ही है – केवल स्वयं का आचरण प्रभावी।
11.	गीता – परमात्मा / वेद–परमात्मा, आत्मा व प्रकृति	इस त्रिभुवन में जीव अनन्त (जीव व अजीव)
12.	मुक्ति हेतु : Active & Passive दोनों मार्ग। GOD IS TRUTH	मुक्ति हेतु : Only Active मार्ग। TRUTH IS GOD
13.	Zero & infinite not concerned much except for God	Zero & infinite meaningful allround
14.	इस प्रकार के मुख्य / अनोखे सिद्धांत नहीं हैं।	अनेकान्तवाद व स्यादवाद सिद्धांत।
15.	इस प्रकार का कुछ विस्तार नहीं है।	जीव एकेन्द्रिय से पचेन्द्रीय इत्यादि।
16.	ज्ञान, शक्ति, शरीर तीनों की पूजा अर्चना।	केवल ज्ञान की ही पूजा अर्चना
17.	मुख्य ईश्वरीय व फलरहित आराधना से भी मुक्ति।	कर्माणु विनाश / केवल ज्ञान प्राप्ति व कर्माणु क्षय द्वारा मुक्ति।
18.	वरदान व श्राप – संभव। देव–राक्षस संग्राम स्थिति महत्वपूर्ण।	वरदान व श्राप – असंभव। ऐसा कुछ नहीं।

19.	प्रसाद प्रथा	प्रसाद प्रथा नहीं
20.	अग्नि यज्ञ	नहीं
21.	ईश्वर आराधना से फल प्राप्ति	ईश्वर आराधना से फल प्राप्ति नहीं
22.	सम्यकत्ववाद (दूसरे प्राणी, प्रकृति व परमात्मा)	एकत्ववाद (केवल स्वयं)
23.	गायत्री मन्त्र – ईश्वरीय ज्ञान व शक्ति को नमन।	नमोकार मंत्र – केवल ज्ञान को नमन।
24.	निश्चयनय व व्यवहारनय नियमों को विशेष महत्व नहीं है।	निश्चयनय व व्यवहारनय महत्वपूर्ण विषय है।
25.	देव व काली पूजा – मान्य।	देव व काली, शक्ति इत्यादि पूजा – वर्जित।
26.	मुख्य फिलोसोफी का आधार – वेद, उपनिषद, गीता व पुराण। ब्रह्मा, विष्णु, महेश तीन की महत्ता।	मुख्य फिलोसोफी – केवल एक : स्वयं शुद्धि। आचरण, तप व त्याग।
27.	कलियुग का प्रारम्भ करीब 5000 वर्ष पूर्व (श्रीकृष्णा पश्चात्) – वर्तमान समय से।	कलियुग (पंचम काल) का प्रारम्भ करीब 2600 वर्ष पूर्व (भगवान महावीर पश्चात) – वर्तमान समय से।
28.	ईश्वर – नियन्ता, जीव – नियन्त्रित, परन्तु ईश्वर अंश रुप	ईश्वर (परमात्मा), जीव (आत्मा), दोनो केवल स्वयनियन्ता
29.	ईश्वर, जीव, प्रकृति, काल व कर्म। माया, पहले 4 शास्वत – परमेश्वर शक्ति।	9 तत्व, 6 द्रव्य – सभी शास्वत।
30.	जीव/चेतन, सिद्ध अवस्था में भी, कभी भी, परम चेतन (परमात्मा–ईश्वर) नहीं हो सकता। वहां भी चेतन स्वरुप ही रहता है। पूर्ण या परम चेतन नहीं। जीव को भी चेतन व क्षेत्रज्ञ कहा गया है (जैसा कि ईश्वर को, परन्तु जीव केवल अपने शरीर हेतु सजग/चेतन तथा भगवान समस्त शरीरों के हेतु भी सजग/चेतन)। चूंकि वह प्रत्येक जीव के ह्रदय में वास करते हैं। हर जीव की मानसिकता से परिचित रहते हैं। नियन्ता रुपक हैं। जैसा जीव चाहता है निर्देशित करते रहते हैं।	जीव (आत्मा)/चेतन ही सिद्ध अवस्था में परमात्मा–ईश्वर, परम चेतन स्वरुप हो जाता है। परमात्मा ईश्वर केवल शुद्ध आत्मा की ही उपाधि है।
31.	जीव के अच्छे कार्यकलाप केवल सतोगुण स्थिति में ही बदलते हैं।	तीन गुणों की मान्यता नहीं है।
32.	चेतना पदार्थ के संयोग से उत्पन्न नहीं होती परन्तु प्रभावित हो सकती है। परन्तु परम चेतना प्रभावित भी नहीं होती।	चेतन स्वरुपता दो नहीं केवल एक मानी गयी है।
33.	चेतना – अर्थ : मैं हूं। कलुषित चेतना – मैं सर्वेसर्वा हूं, भोक्ता हूं, मैं ही सृष्टा हूं इत्यादि।	चेतन का स्वरुप दो नहीं केवल एक माना गया है।
34.	ब्रह्म, विष्णु, महेश व उनकी स्त्री रुपक तीन शक्तियां।	ऐसा कुछ नहीं हैं।
35.	परमात्मा सर्व व्याप्त निराकार (वेद)/साकार (गीता)	निराकार – सिद्ध स्थान।
36.	भगवत गीता को समस्त वेदों के ज्ञान का सार माना गया, परन्तु दोनों के मुख्य	वेदों व गीता की मान्यता नहीं है।

	सिद्धांतों में अंतर है।	
37.	ब्रह्मा, विष्णु व महेश : प्रथम सृष्ट जीव/जीव ईश्वर द्वारा सृष्ट, फिर वह भी सनातन रुपक, तथा ईश्वर के आत्मज – अमैथुनि सृष्ट।	अनन्त जीव पूर्णतया सनातन, अजीव दृव्य भी सनातन।
38.	ईश्वर व उनका धाम सनातन	ऐसा कुछ नहीं हैं।
39.	मोक्ष उपरोक्त सनातन धाम ही है जहां जीव ईश्वर संगत में रहकर सनातन स्थिति बना लेता है।	सिद्ध स्थान (मोक्ष स्थान) अलोकाकाश में सबसे ऊपर स्थित है।
40.	आध्यात्मिक आकाश में असंख्य लोकों की चर्चा है भौतिक लोकों की संख्या से भी अधिक।	सिद्ध लोक (स्थान) केवल एक है।
41.	चेतन, अचेतन से परे – ईश्वर, परमात्मा, परम ब्रह्म (आश्रय तत्व) : भागवत पुराण।	चेतन – परमात्मा।
42.	मल, कर्म व माया बंधन – जीवात्मा।	कर्म बंधन – जीवात्मा।
43.	युग – युग परिवर्तन : चार युग 1–2–3–4 → 1–2–3–4 →	काल परिवर्तन – छह काल 1–2–3–4–5–6 → 5–4–3–2–1 → 2–3–4–5–6 → .....
44.	युग – युग अवस्थायें – (i) सुख (ii) सुख–दुख (iii) दुख–सुख (iv) दुख	काल – काल अवस्थायें – (i) सुख–सुख (ii) सुख (iii) सुख–दुख (iv) दुख–सुख (v) दुख (vi) दुख–दुख
45.	अर्थ, कर्म, काम व मोक्ष चार क्रियायें – पदार्थ।	उल्लेख नहीं।
46.	ऋषि कपिल मुनि का सांख्य दर्शन – 1 पुरुष, 24 तत्व प्रकृति	उल्लेख नहीं।
47.	परमात्मा, अन्तरात्मा व आत्मा	जीवात्मा (अशुद्ध आत्मा), आत्मा, परमात्मा (शुद्ध आत्मा)
नोट	(i) अन्तरात्मा : (ब्रह्मा, विष्णु, महेश या रुद्र) आत्मा : जीव, जीवात्मायें, प्राणी, कीट, पशु, पक्षी इत्यादि। परमात्मा : मुख्य प्राथमिक ईश्वरीय तत्व। (ii) युगों की चर्चा में कल्प व महाकल्प का यहां विवरण नहीं समावेश किया गया है।	(i) जीव या जीवात्मा एक ही तत्व समझिये। (ii) बीच की कड़ी "आत्मा" केवल शब्द मात्र या एक अवस्था मात्र है, अस्तित्व नहीं। जैसे वास्तव में सुगन्ध या दुर्गन्ध होती है। गन्ध केवल संकेत मात्र अवस्था है। ऐसे ही वास्तविकता केवल जीवात्मा (अशुद्ध आत्मा – जीव) की है, या फिर परमात्मा (शुद्ध आत्मा की है जो आत्मा से कर्माणु हटते ही तुरन्त मिलती है)। आत्मा पर कर्माणु रहते हुये जीवात्मा कहलाती है।